नईदुनिया रविवारीय
तरंग
रविवार, 1 दिसंबर 2019
www.naidunia.com
tarang@naidunia.com

जिंदगी के हमसफर जब यात्राओं के हमराही बन जाते हैं, तो उसका लुत्फ ही कुछ और होता है। ऐसे ट्रेवल ब्लॉगर्स कपल कभी मिलकर नए डेस्टिनेशंस के लिए रिसर्च करते हैं तो कभी साथ यात्रा की योजना बनाते हैं। सफर की हर मुश्किल वे मिल-बांटकर सुलझा लेते हैं। घुमक्कड़ी उनके रिश्ते को मजबूत करती है और उन्हें अनजानी दुनिया से भी रूबरू कराती है। विशेष आवरण कथा।

सफर का निकले हमसफर

यशा माथुर

जब जिंदगी में एकदूजे के हमसफर साथ मिलकर यात्रा शुरू करते हैं तो वे एकदूसरे को जानने की शुरुआत भी करते हैं। यात्रा में जितना समय वे साथ बिताते हैं उससे जीवन की लय भी हासिल करते हैं। इस तरह के सफर से किसी जगह को जानने का रोमांच ही दोगुना नहीं हो जाता है बल्कि जिंदगी का सफर भी सुहाना हो जाता है। हम ऐसे ही युवाओं की बात कर रहे हैं जिन्होंने अपने हमसफर के साथ मिलकर यात्राओं को जिंदगी का मकसद बनाया है। ये युगल साथ मिलकर यात्राओं के लिए तैयारी करते हैं और अधिक रुचि लेकर उसे रोमांचक भी बनाते हैं। कहने को तो अधिकतर दंपती साथ ही घूमने जाते हैं, लेकिन ऐसी जोड़ियां खास हैं जिनमें दोनों को ही घूमने का शौक है और दोनों ने यात्राओं को ही जीवन का लक्ष्य बना लिया है। ये युवा कपल अपनी यात्राओं को यादगार बनाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। ये जोड़ियां अपनी यात्राओं की पोस्ट भी करती हैं और उनकी तस्वीरें भी साझा करती हैं ताकि दूसरों को मदद और मार्गदर्शन मिल सके। यात्राओं के लिए इन्होंने बंधी-बंधाई जीवनशैली को ठुकराकर अपने मन की बात सुनी और नए रास्ते तलाशे। इन जोड़ियों से यह सीख भी मिलती है हमारे मन में जिस काम के लिए आवाज उठती है उसे जरूर सुनना चाहिए और कदम बढ़ाना चाहिए।

इन जोड़ियों में हमारे पास सबसे पहली मिसाल आती है गार्गी और मनीष कुमार झा की। दोनों स्कूल में साथ पढ़ते थे। इंजीनियरिंग कॉलेज में भी साथ-साथ रहे। जब विवाह किया तो जीवनसाथी बन गए और उसके बाद वे बने सफर के साथी। उनके विवाह को अब चार साल हो गए हैं। शुरू में तो वे वैसे ही घूमते थे, लेकिन बाद में जब फोटोग्राफी सीख ली तो महसूस किया कि जो जगहें वे देखते हैं, जिनका इतिहास और आर्किटेक्चर उन्हें आकर्षित करता है उनके बारे में लिखना चाहिए। तब उन्होंने ब्लॉग लिखना शुरू किया। इसके साथ ही वे रिसर्च करके घूमने जाने लगे, ताकि जो जगहें मशहूर नहीं हैं, उनको भी एक्सप्लोर किया जा सके। धीरे-धीरे इसमें बहुत आनंद आने लगा। पिछले तीन साल से वे निरंतर ब्लॉगिंग कर रहे हैं। शादी के पांच महीने बाद ही उन्होंने कैमरा खरीद लिया था। गार्गी कहती हैं, 'हम दोनों को आर्किटेक्चर पसंद है, संस्कृतियों को जानना पसंद है। हम भारत के ग्रामीण अंचलों को पसंद करते हैं। मैं रिसर्च और लिखने का काम करती हूं। ट्रैवल के समय नोट्स लेती हूं। सोशल मीडिया ज्यादातर मनीष ही देखते हैं। गार्गी और मनीष ने तीन साल पहले एक प्रोजेक्ट शुरू किया है, 'बिहार बियॉन्ड इमेजिनेशन'। इसके बारे में गार्गी कहती हैं, 'बिहार में घूमने के नाम पर लोग नालंदा और बोध गया बोल कर चुप हो जाते हैं, लेकिन हजारों जगहें हैं वहां घूमने के लिए। हमने बिहार को चार सर्किट में बांटा है और हर साल 20 दिन में एक सर्किट पूरा करते हैं। तीन तो पूरे हो चुके हैं और अगले साल चौथा भी पूरा कर लेंगे। हम बताएंगे कि बिहार में इतिहास किस कदर जीवंत है।' यह जोड़ी और इनके जैसे और भी कपल हैं जो यात्राओं के लिए प्रेरित करते हैं।

मिलकर बांट लेते हैं सफर की जिम्मेदारी

जिंदगी में एकदूसरे के हमसफर बेंगलुरू के रोहित अग्रवाल और शिवानी सूद यात्राओं को साथ वक्त बिताने का सबसे अच्छा तरीका मानते हैं। उनकी शादी को सात साल हो गए हैं और जब भी उन्हें एकदूजे के साथ समय बिताने का ख्याल आता है तो वे यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं। यात्रा पर निकलने से पहले वे मिलकर डेस्टिनेशन ढूंढते हैं और फिर तैयारी के सारे काम आपस में बांट लेते हैं। रोहित फ्लाइट्स, होटल बुकिंग, वीजा आदि का काम देखते हैं और शिवानी रिसर्च के साथ घूमने का समयबद्ध कार्यक्रम बनाती हैं। घूमने के लिए पैसे और छुट्टियां बचाना इस जोड़ी के लिए सबसे बड़ा काम होता है। इसका हल भी उन्होंने निकाल लिया है। इस बारे में रोहित कहते हैं, 'हम एक-दूसरे को गिफ्ट नहीं दिलवाते हैं, बल्कि उस पैसे को ट्रैवल के लिए बचा लेते हैं। मुझे याद नहीं कि मैंने शिवानी को आखिरी गिफ्ट कब दिया था। मेरे और शिवानी के पैरेंट्स भोपाल में हैं। हम छुट्टी लेकर घर नहीं जाते, बल्कि उन्हें यहां बुला लेते हैं। हमारी छुट्टियां बच जाती हैं। हमारी 95 प्रतिशत छुट्टियां घूमने में ही खर्च होती हैं।' अमेजन में फुलटाइम जॉब और ट्रेवलिंग के साथ रोहित प्रोफेशनल फोटोशूट भी करते हैं और शिवानी हेल्दी बेकिंग करती हैं। ये भी उनके शौक हैं। रोहित के मुताबिक, खुद का पैशन होना जरूरी है।

जॉब छोड़ आए ट्रेवल ब्लॉगिंग में

सेंडी और विजय बचपन से अपने अपने माता-पिता के साथ घूमते थे। तभी उन्होंने यात्राओं के महत्व को जान लिया था। शादी के बाद भी उन दोनों ने मिलकर अपनी यात्राओं को जारी रखा। उनकी शादी को 15 साल हो गए हैं। वे दोनों मल्टीनेशनल कंपनी में काम करते थे और जब भी छुट्टी मिलती, घूमने निकल जाते। इसी बीच सेंडी ने फेसबुक पेज बनाया और ट्रेवल स्टोरीज लिखने लगीं। वहां जब काफी लोग इंटरेक्ट करने लगे तो उन्हें बहुत अच्छा लगने लगा और सेंडी ने नौकरी छोड़कर ब्लॉगिंग करना शुरू कर दिया। नौकरी छोड़कर यात्रा को पूरा समय देने का विचार लोगों से मिली प्रतिक्रिया से ही आया। वह बताती हैं, 'जब लोग हमें बुलाने लगे और काम ज्यादा होने लगा, तब विजय ने भी जॉब छोड़ दी और अब हम साथ में फुलटाइम ट्रेवल ब्लॉगिंग करते हैं। अब तक करीब 16 देश की यात्रा कर चुके हैं। भारत पूरा घूम चुके हैं। हम चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा लोग हमारे अनुभव जानें। कोशिश कर रहे हैं कि अपने ब्लॉग के द्वारा सस्टेनेबल टूरिज्म और रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म को बढ़ावा दें।'

छोटी बेटी संग साल में 15 देश घूमे

अपनी छह महीने की छोटी-सी बच्ची को लेकर सर्दी में स्विट्जरलैंड घूमे **रश्मि पंडित और चालुक्य मोहनराज**। इसके बाद वे इटली के लिए एक यादगार ट्रिप पर निकल गए। एक साल होते-होते 15 देश देख लिए उन्होंने। एक ही इंजीनियरिंग कॉलेज से हैं दोनों, लेकिन वहां कभी नहीं मिले। प्लेसमेंट एक ही कंपनी में हुआ और तिरुवनंतपुरम में ट्रेनिंग के दौरान मुलाकात हुई। फिर दोनों की मुंबई में पोस्टिंग हुई, दोस्ती हुई और हुई घूमने की शुरुआत। शादी के दस साल बाद रश्मि पंडित बताती हैं, 'जब भी मुंबई में बारिश होती थी, तो हम ट्रेकिंग के लिए निकल जाते। मैंने प्रेग्नेंसी में जॉब छोड़ दी थी। इसी बीच कंपनी ने चालुक्य को एक प्रोजेक्ट के लिए स्विट्जरलैंड जाने को कहा। हमने सोचा कि बेटी छोटी है तो एक ही जगह रहना ठीक होगा और हम स्विट्जरलैंड चले गए। हम चार महीने के लिए गए थे, तो हमने इसका बेहतर इस्तेमाल करने के लिए घूमने की बात सोची। जब गए थे, तो बहुत बर्फ थी, लेकिन हमने स्विट्जरलैंड एक्सप्लोर किया। फिर रोड से इटली गए, ताकि गाड़ी में हम बच्ची को बेहतर तरीके से संभाल सकें। प्रोजेक्ट का समय बढ़ा और हम 18 महीने वहां रहे। इस बीच 15 से ज्यादा देश देख लिए। यहां आने के बाद हम फिर ईस्ट यूरोप घूमने गए, लेकिन अब बच्ची स्कूल जाने लगी है, तो उसकी छुट्टियों के हिसाब से ट्रैवल प्लान करते हैं। इन दिनों देश की सब जगहें देख रहे हैं।'

यात्राओं के रोमांच को करते हैं साझा

विष्णु और सौम्या एक ही शहर के इंजीनियरिंग कॉलेज में साथ पढ़ते थे और संयोग से वे हमसफर बन गए। 2015 में दोनों शादी के बंधन में बंध गए। दोनों का मानना है कि यात्राओं से लगाव, खानपान का शौक और फिल्मों का शौक उनके बीच कॉमन था और इन बातों से ही उनका जुड़ाव मजबूत होता गया। दोनों ही जब अपनी दिनचर्या में खुद को निढाल पाते हैं तो खुद को रिचार्ज करने के लिए यात्राओं का सहारा लेना पसंद करते हैं। शादी के बाद दोनों अपनी पहली यात्रा पर बाली गए थे और फिर दूसरी यात्रा लद्दाख की रही। दोनों की शादी को जब एक वर्ष हुआ तो उनके पास दूसरों के साथ साझा करने के लिए बहुत सारी ट्रेवल स्टोरीज थीं। दोनों ने तब 'रोडटूटेस्ट' ब्लॉग के जरिए अपनी यात्राओं को दूसरों से साझा करना शुरू किया। तीन महीनों की तैयारी के बाद 2016 में उन्होंने अपनी वेबसाइट लॉन्च की। वेबसाइट को दोस्तों और यात्रा के शौकीनों का अच्छा साथ मिला। दोनों ही इस वेबसाइट के जरिए लोगों को नई जगहों और खानपान के नए ठिकानों के बारे में बताते रहते हैं। दोनों का कहना है कि लोगों को खुद के लिए समय निकालना चाहिए, अपने प्रियजनों के साथ दुनिया देखने की कोशिश करना चाहिए।

दूसरों को बता रहे घूमने का रोमांच

केरल के **गौतम और थारा** ने 2015 में साथ दुनिया शुरू की और दुनिया को देखना भी। दोनों अभी तक 16 देशों की यात्राएं कर चुके हैं। दोनों की रोमांचक यात्राओं में थाइलैंड में टाइगर्स के साथ की गई मस्ती, चीन में ग्लास ब्रिज पर चलना और टर्की में सूफी संतों के बीच नृत्य भी शामिल है। दोनों ने मिलकर इंडोनेशिया में डाइविंग की, अल्प्स पर्वत पर हाइकिंग की और स्लोवेनिया में सेब के बागीचों से सेब तोड़े। इन सभी जगह की यात्रा ने उन्हें बताया कि दुनिया कितनी सुंदर है और जीवन का मकसद इस सुंदर दुनिया को खोजना भी हो सकता है। उनकी वेबसाइट 'क्लूलेसकम्पास डॉट कॉम' पर वे अन्य लोगों को जरूरी मार्गदर्शन देते हुए बताते हैं कि कम बजट में दुनिया कैसे घूमी जा सकती है और दुनिया में देखने के लिए कितनी खूबसूरत जगहें हैं। उनका ब्लॉग यात्रा में दिलचस्पी जगाने का काम करता है। उनके ब्लॉग पर तस्वीरें भी आपको खासा प्रफुल्लित करेंगी और यात्रा पर निकलने के लिए प्रेरित भी।

बाइक पर घूम रहे हैं देश-दुनिया

'कपल्सऑनबाइक' यह **योगेश और रजनी** ने मिलकर शुरू किया है। दोनों सिर्फ एकदूसरे से ही प्रेम नहीं करते हैं बल्कि वे बाइक और यात्राओं से भी प्रेम करते हैं। तीनों को गूंथकर उन्होंने एक वेबसाइट तैयार की है ताकि दूसरों को राह दिखा सकें। दोनों ने महसूस किया कि वे 9 से 5 की नौकरी करके खुश नहीं रह सकेंगे और इसी बात ने उन्हें प्रेरित किया कि वे अपने सपनों को सच करने के लिए कुछ काम करें। दोनों ही लचीलेपन के साथ यात्राएं करना पसंद करते हैं और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों की खूबसूरती को देखने का विचार करते हैं। दोनों मानते हैं कि यात्राएं करने वाले अक्सर अपने अनुभवों को दूसरों तक नहीं पहुंचा पाते हैं और यह बात उनके मन में खटकती रहती है। दोनों ने अपने अनुभवों को वेबसाइट के जरिए दूसरों तक पहुंचाने का फैसला किया।

इनसे सुनिए सड़क यात्राओं का रोमांच

किट्टी और नवीन जब भी छुट्टी मिलती है तो यात्रा की योजना बनाने में लग जाते हैं। वे दोनों सड़क यात्रा पसंद करते हैं क्योंकि यह उन्हें ज्यादा चीजें एक्सप्लोर करने का मौका देती है। जब कोई भी व्यक्ति उनसे यात्राओं की बात करता है तो उनकी आंखों में चमक आ जाती है। वे आपको सड़क यात्राओं के रोचक किस्से सुनाने लगते हैं और साथ ही खाने की जगहों के पते नोट कराने लग जाते हैं। दोनों ने ही दुनिया की कई रोमांचक जगहों की यात्रा साथ की है। वे कैलीफोर्निया, साउथ अफ्रीका से लेकर कई देशों की रोचक जगहों पर जा चुके हैं। दोनों के अनुभवों से रूबरू होने के लिए वेबसाइट है 'द नेकस्ट चेकइन डॉट कॉम'। इस पर उन्होंने अपनी यात्राओं की पोस्ट और पिक्चर शेयर की है ताकि लोगों को खूबसूरत जगहों के बारे में जानकारी मिल सके। दोनों ही ट्रेवल ब्लॉगर्स के तौर पर विभिन्न टूरिज्म बोर्ड के साथ मिलकर काम करते हैं। इस तरह उन्होंने अपनी साझी रुचि यात्रा में ही अपना करियर भी तलाश लिया है।

दुनिया देखने के शौक ने ही जोड़ा जिन्हें

अहमदाबाद के **ऋषभ और निराली शाह** की अरेंज मैरिज हुई थी। दोनों एकदूसरे को जानने के लिए जब पहली बार मिले तो उन्हें पता चला कि उन दोनों में कुछ भी एक-सा नहीं है, बस एक ही चीज कॉमन थी कि दोनों को ही घूमने का बड़ा शौक था। यह एक ही चीज उन्हें जोड़ रही थी। अपनी कहानी बताते हुए ऋषभ कहते हैं, 'हम दोनों के शौक अलग हैं। मुझे समुद्र के किनारे पसंद हैं तो उसे पहाड़। मुझे लोगों से मिलना, उनसे बातचीत करना, उनकी कहानियां सुनना अच्छा लगता है, तो निराली को किसी बगीचे, तलाब या झरने के पास सुकून से बैठना अच्छा लगता है। संस्कृति के बारे में निराली बहुत अच्छी तरह से बात करती हैं। मैं फूडी हूं, मुझे नई वेरायटीज ट्राय करना अच्छा लगता है। हम वेजिटेरियन हैं और इसी के बारे में लिखते हैं। मैं स्थानीय खाने के बारे में लिखता हूं। जगह के बारे में हम मिलकर लिखते हैं। अपने-अपने शौक के हिसाब से हम रिसर्च करते हैं, इसलिए दोनों साथ मिलकर ही चीजें फाइनल करते हैं।' हंसते हुए ऋषभ कहते हैं कि कैमरे के पीछे मैं ज्यादा रहता हूं और कैमरे के आगे वह। निराली स्कूल में पढ़ाती हैं और ऋषभ अपने फैमिली बिजनेस में हैं। वे करीब पांच साल से घूम रहे हैं। दस के करीब देश घूमे हैं। लगभग पूरा भारत कवर किया है। बस उत्तर-पूर्व के कुछ इलाके बाकी हैं।